श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री शठकोपाचार्य कृतं

॥ श्री शौरिराज करावलम्बस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री शौरिराज करावलम्बस्तोत्रम् ॥

श्रीनीलमेघ सुमनोहर दिव्यमूर्ते
सर्वाङ्गसुन्दरविभो वरपुष्कराक्ष।
लोकैकनायक परात्पर पुण्यकीर्ते
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम् ॥ 1 ॥

लक्ष्मीश देव यदुनाथ महीश विष्णो
गोदासमेत गरुडासन शेषतल्प।
वेदान्तवेद्य निजवैभव विश्वमूर्ते
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम् ॥ 2 ॥

श्रीपद्मिनीप्रणयवल्लभ पङ्कजाक्ष
श्रीपञ्चकृष्णवननायक पञ्चवेर।
श्रीमन्त्ररत्नसकलाक्षरसिद्धिदायिन्
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम् ॥ 3 ॥

श्रीनारदादिमुनिपुङ्गवपूजिताङ्घ्रे
नारायणाच्युत हरे प्रणतार्तिहारिन्।
ब्रह्मेशशक्रमुख संस्तुत सद्गुणौघ
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम् ॥ 4 ॥

कासारभूत महदाह्वय विष्णुचित्त -
श्रीभक्तिसार कुलशेखर पाणविप्रैः।
श्रीमच्छठारि परकालमुखैश्च वन्द्य
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम् ॥ 5 ॥

श्रीनाथयोगि कमलेक्षण राममिश्र -
श्रीयामुनेय वरपूर्णनुतप्रभाव।
श्री लक्ष्मणार्य यतिवर्य मुखैस्तुतस्त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ **6**॥

श्रीमीन कूर्म वरलोक नृसिंहवर्णिन्
श्रीजामदग्न्य रघुवीर हलाढ्य कृष्ण।
श्रीकल्किरूप कलिमर्दन कालमेघ
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ **7**॥

वैशाखमास महदुत्सव तुष्टचित्त
माघोत्सवे वरसमुद्रतटे विहारिन्।
आन्दोलिकादि सुखयान गति प्रहृष्ट
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ **8**॥

भक्तं मुनेयधरमात्मगुणैः प्रपूर्णं
संशोद्ध्य तत्सहचरीकृत मुद्रशालिम्।
स्वीकृत्य चार्धनिशि नित्यपदं ददौ त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ **9**॥

श्रीशङ्खचक्रवरदानगदात्तपाणे
सद्भक्तभट्टपरिपालनजागरूक।
श्रीचोलराजपुरतो धृतकेशपाश
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ **10**॥

दर्शे विभीषणवचः कृतवान् भवान्नु
श्रीरङ्गराजगतिभेदमधास्तदर्थम्।
भक्तप्रियश्च भवलुण्ठन कोविदस्त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ **11**॥

अर्केन्दु भौम बुधजीव कवीश सौरि -
भास्वत्किरीट मणिराजित पादपद्म।
अष्टाक्षरैक मनुरत्न कृतात्मरूप
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ 12॥

प्रत्यग्रपापप्रचुरार्दित जीवनस्य
अज्ञानिनश्च ममतामदविह्वलस्य।
कल्याणरूप कमनीय गुणार्णवस्त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ 13॥

नित्यापराधचकितस्य नितान्तदुःख -
कृत्यापचारशतदष्टहृदन्तरस्य।
धर्मादपेत चरितस्य भयाकुलस्य
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ 14॥

संसार जालपतितस्य झषोपमस्य
सद्भक्त धीवरसुता सहितस्त्वमद्य।
दुष्कर्मघर्मजनिभीत्यभिपीडितस्य
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ 15॥

पाशैस्सदा यमभटा बहु तर्जयन्ति
क्षेप्तुं च मां हि नरके नरकान्तकस्त्वम्।
प्राणप्रयाण समये च तदा प्रसन्नः
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ 16॥

॥ श्री शौरिराज करावलम्बस्तोत्रं समाप्तम्॥